chapter. 2

अध्याय-२

हिन्दी राम काव्य का वर्गीकरण

उपलब्ध प्रबन्धात्मक राम-काव्यों का संक्षिप्त परिचय

हिन्दी राम काव्य का वर्गीकरण

पूर्ववर्ती पृष्ठों में हिन्दी के प्रबन्धात्मक राम काव्यों की परम्परा का अनुशीलन करते हुये इस बात की ओर संकेत किया जा चुका है कि प्रवृत्ति गत परिवर्तनों तथा बदलते हुये जीवन मूल्यों एवं सामाजिक दर्शन तथा धार्मिक आन्दोलनों के कारण राम काव्य की रचना का क्षेत्र अत्यन्त व्यापक हो गया। धार्मिक साधना तथा आस्था एवं दार्शनिक चिन्तन के आधार पर विभिन्न उपासना पद्धतियों की वैयक्तिक स्वीकृति तथा कवि के निजी व्यक्तित्व, विश्वासों तथा रुचि के कारण राम काव्य का विकास विभिन्न काव्यशैलियों तथा विविध काव्य रूपों में हुआ। अपने बहुमुखी विकास की सीमा में उसने जीवन की प्रत्येक स्थिति,भाव भूमि, रुचि तथा मानसिक संचेतना के वैविध्यपूर्ण चित्र संवारे हैं। प्रस्तुत अध्याय में इस सम्पूर्ण विकास तथा रूप वैविध्य का वर्गीकरण अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से इस प्रकार किया गया है :-

(१) काव्य रूपों के आधार पर

(२) शैली के आधार पर

(३) प्रयोजन तथा उद्देश्य के आधार पर

(४) वस्तु सगंठन के आधार पर

इन सभी आधारों पर क्रमश: संक्षेप में विचार कर लेना आवश्यक प्रतीत होता है -

(१) काव्य रूपों के आधार पर

काव्य के साधारणत: दो भेद किये गये हैं -

(१) प्रबन्ध काव्य (२) मुक्तक काव्य

मुक्तक से संबंधित विवेचन हमारे अनुशीलन की परिधि से बाहर का है अस्तु यहां केवल प्रबन्ध काव्य पर ही विचार करना उचित होगा। विद्वानों ने प्रबन्ध काव्य के दो भेद किये हैं।१ (१) महाकाव्य (२) खण्ड काव्य।

१- हिन्दी साहित्य कोश भाग १- पृष्ठ ३१६

१- महाकाव्य

महाकाव्य संबंधी परिभाषा निश्चित करने वाले प्रमुख भारतीय आचार्यों में भामह १, दण्डी २, हेमचन्द्र ३, विश्वनाथ ४ तथा रुद्रट ५ का नाम आता है। इन आचार्यों ने अपने अपने समय के लक्ष्य ग्रन्थों को दृष्टि में रखकर महाकाव्य संबंधी विस्तृत परिभाषायें प्रस्तुत की हैं। इसी प्रकार पाश्चात्य काव्य शास्त्रियों में आरिस्टॉटल, एवर क्राम्बे, बावरा, डी गेल, डब्लू०पी० कर, वाल्टेयर तथा डिक्सन प्रमुख हैं जिन्होंने महाकाव्य ~~सं~~ संबंधी विभिन्न मान्यताओं की स्थापना की है और तदनुकूल उसकी आधारभूत सामग्री का उल्लेख कर प्रमुख लक्षणों का निर्धारण किया है। भारतीय तथा पाश्चात्य काव्य शास्त्रियों के द्वारा दी गई विभिन्न परिभाषाओं की चर्चा तथा उन पर विस्तृत विचार करना ~~प्रस्तुत प्रबन्ध के कलेवर में अनावश्यक वृद्धि की संभावना है~~ हमारा अभिप्रेत नहीं है। अतः यहां हम इन काव्य शास्त्रियों की महाकाव्य संबंधी उस व्यापक तथा सर्वमान्य परिभाषा को ही स्वीकार कर लेना अधिक उचित समझते हैं जो सामान्य रूप से दोनों के मतों का समन्वय करती है। हिन्दी साहित्य कोश के अनुसार महाकाव्य की समन्वित परिभाषा निम्नांकित है -

> " महाकाव्य वह छन्दोबद्ध कथात्मक काव्य रूप है जिसमें क्षिप्त कथा प्रवाह या अलंकृत वर्णन अथवा मनोवैज्ञानिक चित्रणों से युक्त ऐसा सुनियोजित सांगोपांग और जीवन्त लम्बा कथानक हो जो रसात्मकता या प्रभान्विति उत्पन्न करने में पूर्ण समर्थ हो सके, जिसमें यथार्थ कल्पना या संभावना पर आधारित ऐसे चरित्र या चरित्रों के महत्वपूर्ण जीवन वृत्त का पूर्ण या आंशिक रूप से वर्णन हो, जो किसी युग के सामाजिक जीवन का किसी न किसी रूप में प्रतिनिधित्व कर सके, जिसमें किसी महत्प्रेरणा से अनुप्राणित होकर किसी महत् उद्देश्य की सिद्धि के लिये महत्वपूर्ण गम्भीर अथवा रहस्यमय और आश्चर्योत्पादक घटना या घटनाओं का आश्रय लेकर संश्लिष्ट और समन्वित रूप से जाति विशेष या युग विशेष के समग्र जीवन के विविध रूपों, पक्षों, मानसिक अवस्थाओं

१- दृष्टव्य- भामह का काव्यालंकार २- दण्डी का काव्यादर्श

३-हेमचन्द्र का काव्यानुशासन ४-विश्वनाथ का काव्यदर्पण तथा ५-रुद्रट का -काव्यालंकार ।

और कार्यों का वर्णन और उद्घाटन किया गया हो और जिसकी शैली इतनी गम्भीरमयी और उदात्त हो कि युग युगान्तर तक महाकाव्य को जीवित रहने की शक्ति प्रदान कर सके । १

अस्तु, उपर्युक्त परिभाषा पर आधारित महाकाव्यों के स्थायी लक्षण इस प्रकार निर्धारित किये गये हैं ।२

१- महदुद्देश्य, महत्प्रेरणा और महती काव्य प्रतिभा

२- गुरुत्व ,गाम्भीर्य और महत्व

३- महत्कार्य और युग जीवन का समग्र चित्रण

४- सुसंघटित जीवन कथानक

५- महत्वपूर्ण नायक तथा अन्य पात्र

६- गरिमामयी उदात्त शैली

७- तीव्र प्रतिभान्विति और गम्भीर रस व्यंजना

८- अनवरुद्ध जीवनी शक्ति और सशक्त प्राणवत्ता

भारतीय तथा पाश्चात्य दोनो अवधारणाओं के समन्वित रूप ने ही महाकाव्य संबंधी इन लक्षणों को स्वीकार किया है जो विभिन्न युगीन विभिन्न महाकाव्यों के अध्ययन तथा विश्लेषण का ही परिणाम है।

पूर्ववर्ती पृष्ठों में राम काव्य धारा की प्रबन्धात्मक रचनाओं का उल्लेख करते समय यह संकेत किया जा चुका है कि मानस पूर्ववर्ती रचनाओं को अधिकांश की प्रामाणिक सामग्री अब तक उपलब्ध न होने के कारण इन रचनाओं पर सम्यक् अध्ययन सम्भव नहीं हो सका है। अत: खोज विवरणों तथा विद्वानों के द्वारा की गई खोज सामग्री के आधार पर ही हम इन रचनाओं के परिचय पर सन्तोष करेंगे । प्राप्त सूचनाओं के आधार पर मानस पूर्ववर्ती रचनाओं में निम्नांकित रचनाओं को महाकाव्य के अन्तर्गत रखा जा सकता है

	रचयिता	रचना	रचनाकाल
१-	कवि भूपति कृत	रामचरित ~~~~ रामायन	१३४२ वि०
२-	गोस्वामी विष्णुदास कृत	रामायणी कथा	१४६२ वि०

१-हिन्दी साहित्य कोश भाग १ पृष्ठ ६२७ लेखक डा० शम्भूनाथ सिंह

२- वही - पृष्ठ वही

३- बालचन्द्र जैन कृत (जैन राम कथा) राम-सीता चरित्र १५८० वि०

४- ब्रह्मजिन दास कृत (जैन रामकथा) रामचरित या रामरास १६१६वि

मानस परवर्ती रचनाओं में अवश्य ही उच्चकोटि के महाकाव्य मिलतेहैं जिनकी उपलब्ध सूची इस प्रकार है -

रचना	रचयिता	रचनाकाल
१-रामप्रकाश रामायण	मुनिलाल	सं० १६४२ वि०
२- रामचन्द्रिका	केशवदास	सं० १६५८
३- गुणराम रासौ	माधौदास चारण	सं० १६७५
४- रामायण	कपूरचन्द	सं० १७००
५- सीताचरित्र	रामचन्द	सं० १७१३ वि०
६- रा-मायण	भगवन्तराय खीची	सं० १७२७ ई० (सं० १७८४ वि०)
७- अवध विलास	लालदास	सं० १७३२
८- अवतारचरित्र	वारहट नरहरिदास	सं० १७३३ वि०
९- रामअवतारलीला	मलूकदास	रचनाकाल अज्ञात-किन्तु कवि की मृत्यु सं० १७३९ वि० में हुई।
१०- गोविन्द रामायण	गुरुगोविन्दसिंह	सं० १७५५ वि०
११- अवधसागर	जानकीरसिक शरण	सं० १७६०
१२- सीतायन	रामप्रियाशरण	सं० १७६०
१३- रघुवंश दीपक	सहजराम	सं० १७८९
१४- रामचरित्र	रामधीन	सं० १८वीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध
१५- रामायण	चन्दकवि	१८वीं शताब्दी की रचना

२- खण्ड काव्य

आचार्य विश्वनाथ ने खण्डकाव्य की परिभाषा करते हुये कहा है ' खण्ड काव्यं भवेत काव्यस्यैक देशानुशारिच १ अर्थात् काव्य में एकांश या एक देश

१- आचार्य विश्वनाथ - साहित्य दर्पण ६।३२८

का अनुसरण ही खण्ड काव्य है। वक्रोक्ति जीवित कार कुन्तक ने भी आचार्य विश्वनाथ के ही मत का समर्थन करते हुये कहते हैं " प्रबन्ध स्यैकदेशा-नाम्फल बन्धान बन्धवान् १ तथा ध्वन्यालोक के रचयिता अभिनव गुप्त भी इसी मत का समर्थन करते हैं । २ इन आचार्यों के मतों का पूर्ण विवरण प्रस्तुत करते हुये डा० राम कुमार गुप्त ने अपने शोध प्रबन्ध ' हिन्दी खण्डकाव्यों का अध्ययन ' में खण्डकाव्य के निम्नांकित लक्षण निर्धारित किये हैं :-

खण्ड काव्य के लक्षण

१-रचना का प्रबन्धात्मक रूप

२-कथा की ऐतिहासिकता

३-नायक की उदात्तता

४-आद्यन्त एक रस की प्रधानता

५- नायक की फलसिद्धि

६- कथा के एक अंश का चित्रण ३

हिन्दी साहित्यकोश के अनुसार ' खण्ड काव्य एक ऐसा पद्य बद्ध कथा काव्य है जिसके कथानक में इस प्रकार की एकात्मक अन्विति हो कि उसमें प्रासंगिक कथायें सामान्यतया अन्तर्मुक्त न हो सकें, कथा में एकांगिता एक देशीयता हो तथा कथा विन्यास में क्रम, आरम्भ विकास चरमसीमा और निश्चित उद्देश्य में परिणीत हो। खण्डकाव्य के आकार में लघुता स्वाभाविक है उद्देश्य की महाकाव्य जैसी महनीयता सम्भव नहीं । खण्डकाव्य का कथानक पौराणिक ऐतिहासिक, काल्पत और प्रतीकात्मक किसी भी प्रकार का हो सकता है ।" ४

१- कुन्तक - वक्रोक्ति जीवितम् ४।५

२- अभिनव गुप्त - धत्या लोक - लोचन उधोत ३।७

३- डा० रामकुमार गुप्त - हिन्दी खण्ड काव्यों का अध्ययन

४- हिन्दी साहित्यकोश भाग १ पृष्ठ २७५

कुछ विद्वानों ने खण्ड काव्य में एक ही छन्द के आद्यन्त प्रयोग को स्वीकार किया है १ किन्तु इसे आवश्यक तत्व के रूप में स्वीकार नहीं किया जा सकता और न कवियों ने प्राय: इसका अनुगमन ही किया है। उपर्युक्त लक्षणों से स्पष्ट है कि खण्ड काव्य में महाकाव्य के समान जीवन की व्यापकता की अभिव्यक्ति न होकर उसके एक पक्ष की ही प्राय: अभिव्यक्ति होती है। हिन्दी राम काव्य धारा में खण्डकाव्यों की रचना मानस के पूर्ववर्ती तथा परवर्ती दोनों कालों में पर्याप्त मात्रा में मिलती है। उपलब्ध खण्डकाव्यों में कुछ ऐसे भी कृतियाँ हैं जिनमें राम कथा के किसी मुख्य पात्र को आधार बनाकर लिखी गयी हैं किन्तु उसमें राम के ही किसी एक चरित्र के अंश का वर्णन मिलता है इनमें मुख्यपात्र हनूमान, सीता, लक्ष्मण, भरत तथा लवकुश एवं अंगद हैं। प्रस्तुत अध्ययन में ऐसे खण्ड काव्यों की सूची निम्नांकित है :-

मानस पूर्ववर्ती खण्ड काव्य

रचना	रचनाकार	रचनाकाल
१-रावणमन्दोदरी संवाद	मुनि लावण्य (जैन रामकथा)	१५०० वि०
२-भरत विलाप	ईश्वरदास	१५५५ वि०
३-अंगद पैज	ईश्वरदास	१५५५ वि० लगभग
४-हनुमान चरित	सुन्दरदास	१६१६ वि०
५-हनुमान चरित्र	ब्रह्मराय मल्ल जैन	१६१६ वि०
६-हनुमच्चरित्र	रायमल्ल पाण्डे	१६१६ वि०

मानस पूर्ववर्ती प्रबन्धात्मक राम काव्यों में उपलब्ध खण्ड काव्यों में प्राय: सभी रचनायें राम कथा के अन्य पात्रों के नाम से ही संबंधित मिलती हैं किन्तु इनमें राम के ही चारित्रिक गुणों का गान हुआ है।

१- हिन्दी साहित्य कोश भाग १ पृष्ठ २७५

मानस परवर्ती खण्डकाव्य

रचना	रचनाकार	रचनाकाल
१- रामलला नहछू	गोस्वामी तुलसीदास	सं० १६४० वि०
२- जानकी मंगल	-वही -	सं० १६४३ वि०
३- हनुमानदूत	पुरुषोत्तम	सं० १७०१ वि०
४- अंगद पर्व	लालदास	सं० १७३२ के लगभग
५- रामाश्वमेध	नारायणदास पूर्वनमम उग्र	सं० १७३६ वि०

मानस परवर्ती प्रबन्धात्मक राम काव्यों में महाकाव्योंकी संख्या अधिक है जब कि खण्डकाव्यों की संख्या कम है।इन रचनाओं में से अधिकांश रीतिकालीन रचनाये हैं ।

२- शैली केआधार पर

शैली के आधारपर हिन्दी के प्रबन्धात्मक राम काव्यों को हम निम्नांकित वर्गों में विभाजित कर सकते हैं -

(१) पद शैली (२) दोहा चौपाई (३) कवित्त सवैया

(४) विविध छन्द

हिन्दी का अधिकांश प्रबन्धात्मक राम काव्य दोहा चौपाई तथा विविध छन्दों की शैली में ही मिलता है किन्तु पद शैली तथा कवित्त सवैया शैली में भी कवियों ने रचनायें की हैं । श्री रामाधीन कृत `रामचरित्र `तथा जानकी रसिक शरण जी कृत ` अवध सागर ` पद शैली की श्रेष्ठ रचनायें हैं। इसी प्रकार उग्र कृत रामाश्वमेध तथा भगवन्तराय खीची द्वारा रचित रामायण कवित्त सवैया शैली की उच्च कोटि की रचनायें हैं। दोहा चौपाई शैली में लिखा गयामहाकाव्य मलूकदास कृत रामअवतार लीला, कवि लालदास कृत अवध विलास, उच्चकोटि की रचनायें हैं । हमारे आलोच्य कवि श्री सहजराम जी कृत रघुवंश दीपक इस शैली की रामचरित मानस के बाद की सर्वाधिक श्रेष्ठ रचना है। विविध छन्दो की शैली में लिखी गई रामचन्द्रिका कवि केशवदास जी की अत्यधिक प्रख्यात रचना है जिसे छन्दो का अजायबघर कहागयाहै

गुरु गोविन्द सिंह कृत गोविन्द रामायण में भी विविध छन्दों का अच्छा प्रयोग हुआ है। इस महाकाव्य में दोहे, चौपाई, कवित्त आदि साधारण छन्दों के अतिरिक्त अन्य ३७ प्रकार के छन्दों का प्रयोग किया गया है। माधोदास चारण कृत राम रासो में भी विविध छन्दों का सफल प्रयोग किया गया है। गोस्वामी तुलसीदास कृत जानकी मंगल में हरगीतिका तथा अरुण छन्दों का प्रयोग हुआ है। इसी प्रकार रामलला नहछू में उन्होंने 'सोहर' छन्द का सफल प्रयोग कर सम्पूर्ण खण्ड काव्य को एक ही छन्द में पूरा किया है। चंद कवि कृत रामायण के दोहा, छप्पय, भूलना तथा सवैया का प्रयोग किया गया है। समग्रत: यह कहा जा सकता है कि शैली के आधार पर राम काव्य की प्रबन्धात्मक धारा अत्यधिक सम्पन्न है और उसमें उच्च कोटि की रचनायें हुई हैं।

३- प्रयोजन तथा उद्देश्य के आधार पर

हिन्दी के प्रबन्धात्मक राम काव्य को प्रयोजन तथा उद्देश्य के आधार पर तीन वर्गों में विभाजित किया जा सकता है -

(१) भक्ति विषयक

(२) साहित्यिक

(३) युगीन चेतना की अभिव्यक्ति से युक्त

हिन्दी राम काव्य धारा की अधिकांश रचनायें भक्त कवियों की लेखनी से प्रसूत हुई हैं। अत: उनमें भक्ति विषयक रचनाओं का बाहुल्य स्वाभाविक ही है। वैयक्तिक साधना तथा सम्प्रदाय विशेष की राम भक्ति से प्रभावित होने के कारण इन भक्ति विषयक रचनाओं में भी भक्ति के विभिन्न स्वरूप तथा श्रीराम को ही परात्पर ब्रह्म का साक्षात् विग्रह मानकर उनके यशोगान में अहर्निशि अपने आपको निमग्न रखने वाली सगुण उपासना के ही आह्लादकारी चित्र संवारे गये हैं किन्तु इसका यह तात्पर्य नहीं है कि भक्ति विषयक रचनाओं के अतिरिक्त अन्य रचनाओं का अभाव है। प्रतिभा सम्पन्न भक्त कवियों की रचनाओं में भक्ति के अतिरिक्त अन्य सभी जीवन

संबंधी विभिन्न व्यापारों की विशद चर्चा है। उच्च कौटि के साधक तथा भक्त होते हुये भी इस धारा के कवि जीवन से दूर नहीं थे। अतः उनकी रचनाओं में मानव जीवन की विभिन्न भाव भूमियों, क्रिया कलापों तथा सामाजिक एवं राष्ट्रीय समस्याओं के महत्वपूर्ण प्रश्नों पर अत्यन्त सुलझे हुये समाधान मिलते हैं। इस धारा के सर्वाधिक प्रतिभा सम्पन्न तथा हिन्दी साहित्य के सर्वश्रेष्ठ महाकवि तुलसीदास जी के रामकाव्य में भक्ति की विशद व्याख्या तथा मुख्य भूमिका होते हुये भी सामाजिक तथा राष्ट्रीय समस्याओं के जो महत्वपूर्ण समाधान मिलते हैं उन्हें देखकर कौन यह कह सकेगा कि वे केवल भक्त कवि ही थे। वे सच्चे अर्थों में युग दृष्टा तथा मानव हित चिंतक थे। इसी कारण उनके काव्य में तीनों ही प्रकार की सफल रचनायें मिलती हैं। इसी प्रकार सहजराम जी में भी भक्ति, साहित्य तथा युगीन चेतना की सफल अभिव्यक्ति का समन्वयात्मक रूप अत्यन्त उच्च कौटि का मिलता है।

भक्ति विषयक रचनाओं के बाहुल्य के कारण साहित्यिक रचनाओं की संख्या यद्यपि इस धारा में अपेक्षाकृत कम है किन्तु फिर भी केशवदासजी की रामचन्द्रिका, गोस्वामी तुलसीदास कृत रामलला नहछू तथा जानकीमंगल, ईश्वरदास कृत भरतविलाप, माधौदास चारण कृत राम रासौ, चंदकवि कृत रामायण इस वर्ग की उत्तम रचनायें हैं।

युगीन चेतना की अभिव्यक्ति की दृष्टि से रघुवंश दीपक तथा गोविन्द रामायण, इस धारा की ~~सर्वश्रेष्ठ~~ उल्लेखनीय कृतियां हैं। यद्यपि अवध विलास, अवधसागर, सीतायन, सीता चरित्र में भी समकालीन युग चेतना की अभिव्यक्ति हुई है किन्तु यह अभिव्यक्ति केवल एक ही क्षेत्र से संबंधित है। रीतिकाल की रचनायें होने के कारण इन रचनाओं में समकालीन श्रृंगारी प्रवृत्ति के दर्शन होते हैं + जिनमें राम-सीता के रास वर्णन तथा रस केलि के विस्तार सहित प्रसंग उस काल की श्रृंगारिकता को ही प्रकट कर सके हैं। गोविन्द रामायण भी रीतिकाल की रचना है किन्तु उसमें भारतीय जन जीवन की आकांक्षा संघर्ष गाथा को मुखरित ~~राम काव्य के माध्यम से प्रस्तुत~~ किया गया है। ~~जिसमें~~ गुरु गोविन्द सिंह जी ने दासता के बन्धन में जकड़ी हुई हिन्दू जाति के संघर्ष रत जीवन को राम के

लोक नायकत्व के प्रेरणास्पद जीवन के माध्यम से उनमें विजय प्राप्ति की महत्वकांक्षा को जागृत किया है। अपने युग की विभिन्न युद्ध प्रणालियों का प्रभावशाली चित्र इस महाकाव्य के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। 'रघुवंश दीपक' में युग जीवन के ~~सभी~~ विविधपक्षीय चित्र मिलते हैं। सामाजिक, राजनीतिक तथा सांस्कृतिक जीवन की युग चेतना को कवि ने बड़े प्रभावशाली ढंग से राम कथा के माध्यम से प्रस्तुत किया है। महाकवि तुलसी की ही भांति सहजराम जी ने हर क्षेत्र में समन्वय का प्रयास किया है। अस्तु यदि रघुवंश दीपक को, जैसा कि पहले भी कहा जा चुका है, इन सभी वर्गों की सशक्त प्रति ~~समन्वयात्मक रचना~~ समन्वय की भिन्न चेतना से युक्त निर्मा कहा जाये तो अतिश्योक्ति न होगी।

४- वस्तु संगठन के आधार पर

वस्तु संगठन के आधार पर हम हिन्दी राम काव्य धारा को चार वर्गों में रख सकते हैं :-

१- पौराणिक
~~२- महाकाव्य पद्धति~~
२- पात्र के आधार पर
३- घटना प्रधान

पौराणिक वस्तु के आधार पर हमें इस धारा में बहुत कम रचनायें प्राप्त होती हैं। ब्रह्मजिनदास कृत रामचरित या राम रास जिसका आधार जैन राम कथा है, को हम पौराणिक रचना की श्रेणी में रख सकते हैं। इसी प्रकार रामचन्द्र कृत सीता चरित्र को भी पौराणिक कथावस्तु के आधार पर रची गई रचना माना जा सकता है। यह सत्य है कि राम काव्य धारा की सभी प्रबन्धात्मक रचनाओं में राम कथा का पौराणिक रूप ही मिलता है किन्तु कवियों ने उसे प्रख्यात कथानक के रूप में ही ग्रहण किया है और अपनी काव्य प्रतिभा के बल पर उसे महाकाव्य अथवा खण्डकाव्य का रूप दे सके। अस्तु महाकाव्य पद्धति पर ही इस धारा के कवियों ने वस्तु संगठन का उपक्रम किया है। इस आधार पर सभी महाकाव्य इस वर्ग में सम्मिलित किये जा सकते

पात्रों के आधार पर इस धारा में महा काव्य तथा खण्ड काव्य दोनों ही रचनायें उपलब्ध हैं जिनमें हनुमान , अंगद, भरत, लक्ष्मण, सीता तथा प्रमुख पात्र राम के सम्पूर्ण अथवा आंशिक चरित्र का गान हुआ है। सभी हनुमान चरित्र तथा सीतायन, सीता चरित्र ,अंगद पैज, भरत विलाप, इस वर्ग की रचना में आती हैं ।

घटना प्रधान रचनाओं के वर्ग में रामाश्वमेध को विशेष रूप से रखा जा सकता है तथा भरत विलाप, हनुमान दूत व अंगद पर्व को भी सम्मिलित किया जा सकता है ।

इस प्रकार उपर्युक्त विवेचन के आधार पर हम यह कह सकते हैं कि हिन्दी की प्रबन्धात्मक राम काव्य धारा काव्य के विभिन्न रूपों तथा शैली की विविधताओं को समेटती हुई प्रयोजन तथा उद्देश्य के विभिन्न पक्षों को अपने बहुमुखी विकास के व्यापक क्षेत्र की क्रीड़ा भूमि बनाती हुई परम्परा से प्राप्त कथा वस्तु में समयानुकूल परिवर्तन तथा सम्वर्द्धन करती हुई सतत् गतिमान रही है ।

उपलब्ध रचनाओं का संक्षिप्त परिचय

हिन्दी की प्रबन्धात्मक राम काव्य धारा के अध्ययन के अन्तर्गत हम पूर्ववर्ती पृष्ठों में यह संकेत कर चुके हैं कि इस धारा की बहुत सी ऐसी रचनायें हैं जिनका उल्लेख मात्र ही केवल उपलब्ध है। खोज विवरणों तथा इतिहास ग्रन्थों से उपलब्ध होने वाली सूचनाओं के अतिरिक्त इन रचनाओं की प्रामाणिक सामग्री कहीं भी उपलब्ध नहीं होती। अस्तु ऐसी रचनाओं का परिचय उपर्युक्त सूत्रों से प्राप्त सूचनाओं के आधार पर ही यहां दिया जा रहा है। एक उल्लेखनीय तथ्य यह भी है कि खोज विवरणों में जिन रचनाओं का उल्लेख मिलता है तथा उनके प्राप्त होने के सूत्रों का जो विवरण उपलब्ध होता है उनमें से बहुत सी रचनायें उन स्थलों पर नहीं प्राप्त होती। लेखक ने स्वयं ऐसी अनेक रचनाओं की खोज में यात्रायें की हैं किन्तु प्राप्त सूचनाओं तथा पतों पर वे रचनायें उसे उपलब्ध नहीं हो सकीं। अतः ऐसी रचनाओं के परिचय प्राप्त सूचनाओं पर ही आधारित हैं किन्तु जिन रचनाओं को लेखक ने स्वयं देखा है उनका परिचय लेखक के स्वयं के अध्ययन पर आधारित है। यहां उन सभी रचनाओं का परिचय इसी आधार पर प्रस्तुत किया जा रहा है साथ ही उन सूत्रों का उल्लेख भी किया जा रहा है जिनसे रचनाओं का परिचय प्राप्त हो सका है -

१- रामचरित रामायन :

इसके रचयिता कवि भूपति थे। रचना काल सं० १३४२ वि० माना जाता है। इस ग्रन्थ का उल्लेख नागरी प्रचारिणी सभा, काशी द्वारा प्रकाशित खोज रिपोर्ट सन् १६०६,०७ के पृष्ठ १ पर मिलता है। इसे महाकाव्य के कोटि की रचना स्वीकार किया गया है। अन्य विवरण के अभाव में इस रचना पर कुछ भी मत व्यक्त करना सम्भव नहीं है।

२- रामायणी कथा :

इसके रचयिता गोस्वामी विष्णुदास जी थे। रचनाकाल सं० १४९२ वि०

माना गया है। इस ग्रन्थ का उल्लेख डा० माताप्रसाद गुप्त ने हिन्दी साहित्य द्वितीय खण्ड के पृष्ठ ३०४,५ पर किया है। नागरी प्रचारिणी सभा, काशी की खोज रिपोर्ट सं० १६०६,८,४१ तथा ४३ में भी इसका उल्लेख मिलता है। इसे वाल्मीकि रामायण पर आधारित महाकाव्य की कोटि की रचना माना गया है ।

३- रावण मन्दोदरी सम्वाद:

मुनि लावण्य कृत यह रचना सं० १५०० वि० की मानी जाती है। इसका उल्लेख डा० माता प्रसाद गुप्त ने हिन्दी साहित्य द्वितीय खण्ड प्रथम संस्करण के पृष्ठ ३०६ पर किया है। सीता हरण की कथा सम्वाद रूप में कही गई है। इसे खण्ड काव्य के रूप में स्वीकार किया गया है ।

४- भरत विलाप :

इसके रचयिता कवि ईशरदास जी थे तथा इसका रचना काल सं० १५५५ वि० माना गया है। भरत विलापा की तीन हस्त लिखित प्रतियोंका पता चलता है जिनमें हकउला, बहरायच तथा हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग की प्रतियां है। इनमें हकउला की प्रति जिसका लिपि काल सं० १८१६ वि० है सबसे प्राचीन प्रति है। बहराइच की प्रति का लिपिकाल सं० १६०३ वि० तथा हिन्दी साहित्य सम्मेलन की प्रति का लिपि काल सं० १६०६ वि० है। इस रचना का प्रकाशन डा० शिवगोपाल मिश्र ने ईशरदास कृत सत्यवती कथा तथा अन्य कृतियों के अन्तर्गत सन् १६५८ (सं० २०१५ वि०) के विद्या मन्दिर प्रकाशन ग्वालियर से किया है जिसमें अब तक की प्राप्त सभी प्रामाणिक सामग्री का उपयोग किया गया है। भरत विलाप में राम वन गमन पर भरत के द्वारा किये गये विलाप का वर्णन है। ननिहाल से आकर भरत ने कैकेयी के मुख से राम के वनवास का कारण सुनकर , उसके मूल में अपने ही स्वार्थ को देख कर जो शोक व्यक्त किया है

कवि ने उसे दोहा-चौपाई में बिना किसी सर्ग विभाजन के प्रस्तुत किया है। चित्रकूट पर राम से भेंट तथा पुन: अयोध्या लौट कर उनकी आज्ञानुसार राजकाज चलाने का भार स्वीकार करने तक की कथा मिलती है जिसमें विरह वर्णन का भाग आधे से अधिक है। रचना ठेठ अवधी में है जिससे ग्रामीण शब्दों का प्रयोग अधिकांश मात्रा में हुआ है। `भरत विलाप ` के आधार पर कवि की भावुकता तथा मार्मिक भावों की अभिव्यक्ति की पर्याप्त क्षमता को भली भांति लक्ष्य किया जा सकता है। राम के वनवास पर उनके वियोग में पशु पक्षी तो रोते ही हैं कवि ने सिंह और बाघ जैसे हिंसक पशुओं को भी रुला दिया है। यहां एक उदाहरण देना अप्रासंगिक न होगा-

घर घर रोवै पुरुष और नारी।बाट जात रोवै पनिहारी।।
पशु पक्षी रोवै सब झारी। बाघ सिंह रोवै वन माहीं ।।

\- - - - - - - -

कौशल्या के रोवत ,विकल भयो संसार ।।
जैसे कुररी कुहके , बाघ सिंह वन पार ।। १

इस प्रकार यह रचना प्रबन्ध काव्य के अन्तर्गत खण्ड काव्य की कोटि में रखी जा सकती है। अब तक की प्राप्त सूचनाओं तथा विवरणों के आधार पर इसे ही हिन्दी राम काव्य धारा के अन्तर्गत प्रथम प्रबन्धात्मक रचना के रूप में स्वीकार किया जा सकता है जिसका विस्तृत विवरण प्रस्तुत प्रबन्ध के प्रथम अध्याय में दिया जा चुका है।

५- अंगद पैज :

इस रचना के रचयिता भी कवि ईशरदास जी थे तथा इसका रचना काल भी सं० १५५६ से १५६० वि० के मध्य स्वीकार किया गया है।

१- देखिये - भरत विलाप - डा० शिव गोपाल मिश्र द्वारा सम्पादित कवि ईशरदास कृत सत्यवती कथा, तथा अन्य कृतियां सन् १९५८ संस्करण ।

' अवधी ' भाषा में दोहा - चौपाई शैली में रचित इस रचना में अंगद का दूत बन कर लंका जाना तथा रावण की सभा में पद रोपन की कथा का वर्णन कवि ने विना किसी सर्ग विभाजन के एक हि वर्णन में किया है। भाषा का रूप वही है जो ' भरत विलाप ' में । वर्णन साधारण है जिसमें इतिवृत्तात्मकता का पालन किया गया है। रावण अंगद सम्वाद प्रभावशाली नहीं कहे जा सकते । रचना को खण्ड काव्य स्वीकार किया जा सकता है ।

६- राम सीता चरित्र:

बालचन्द्र जैन कृत इस रचना का रचना काल सं० १५८० वि० माना गया है। मिश्रबन्धुओं के अनुसार इसमें सम्पूर्ण रामकथा वर्णित है। ग्रन्थ का उल्लेख मिश्रबन्धु विनोद भाग १ द्वितीय संस्करण पृष्ठ २८६ पर मिलता है किन्तु अन्य विवरण प्राप्य नहीं है, अत: मिश्र बन्धुओं के आधार पर ही इसे महाकाव्य की कोटि की रचना मानने के लिये विवश होना पड़ता है।

७- हनुमान चरित :

इसके रचयिता, कवि सुन्दर दास जी थे तथा रचनाकाल सं०१६१६वि० है। इस रचना का उल्लेख नागरी प्रचारिणी सभा काशी की खोज रिपोर्ट सन् १६३२ तथा ३४ में मिलता है। इसी एक प्रति जिसका लिपिकाल सं०१६१५ है बड़ा जैन मन्दिर, बाराबंकी में फटी हुई स्थिति में उपलब्ध है। हनुमान जन्म की कथा ही पढ़ने में आती है। लेखक द्वारा शेष अंश पढ़े नहीं जा सके। ऐसा प्रतीत होता है कि जैन राम कथा के आधार पर ही इसकी रचना हुई है जो परम्परा से प्राप्त राम काव्य धारा से भिन्न खण्ड काव्य के रूप में रची गई होगी ।

८- हनुमान चरित्र :

ब्रह्म राम मल्ल जैन कृत इस रचना को सं० १६१६ वि० की रचना

माना गया है। डा० माता प्रसाद गुप्त ने हिन्दी साहित्य द्वितीय खण्ड में इस रचना का उल्लेख किया है जिसमें सं० १७३० की लिपिकाल की एक प्रति को विद्या प्रचारिणी जैन सभा, जयपुर में उपलब्ध होने की सूचना भी दी है। जैन राम कथा का यह ग्रन्थ उपर्युक्त पते पर अत्यन्त जीर्ण शीर्ण अवस्था में उपलब्ध है। प्रारम्भ के अंश को छोड़कर अन्य अंश पढ़े नहीं जा सकते। अस्तु, इस रचना के सबंध में अन्य विवरण प्राप्त नहीं होते ।

९- हनुमान चरित:

मिश्र बन्धुओं के अनुसार इसके रचयिता रामभल्ल पाण्डे थे तथा रचना काल सं० १६१६ वि० है। मिश्र बन्धु विनोद भाग १ द्वितीय संस्करण में इसके उल्लेख मिलने के अतिरिक्त अन्य कोई विवरण प्राप्त नहीं होता।

१०-रामचरित या राम रास :

इसके रचयिता ब्रह्म जिन दास तथा रचना काल सं० १६१६ वि० माना गया है। इस रचना का उल्लेख डा० माता प्रसाद गुप्त ने हिन्दी साहित्य द्वितीय खण्ड में पृष्ठ ३०६ पर किया है। इसे पौराणिक पद्धति पर रचित जैन राम कथा की महाकाव्य के कोटि की रचना माना गया है। अन्य विवरण अप्राप्य हैं ।

११-रामप्रकाश रामायण:

डा० रामकुमार वर्मा ने इस रचना का उल्लेख अपने हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास तृतीय संस्करण के पृष्ठ ३३६ पर किया है तथा इसके रचयिता मुनिलाल एवं रचनाकाल सं० १६४२ वि० माना है। डा० वर्मा के अनुसार रीति शास्त्र के आधार पर इस ग्रन्थ में सम्पूर्ण राम कथा वर्णित है और यह महाकाव्य के कोटि की रचना है। किन्तु यह ग्रन्थ कहां, उपलब्ध है अथवा उसे उन्होंने कहां देखा, यह विवरण उपलब्ध न होने के कारण इस सबंध में कुछ कहना सम्भव नहीं केवल प्राप्त सूचना के आधार पर संतोष

करना पड़ता है ।

१२- रामायण या रामचरित्र:

कवि कपूर चन्द द्वारा रचित यह सं० १७०० वि० की रचना मानी जाती है। सम्पूर्ण राम कथा से युक्त यह रचना महाकाव्य के कोटि की रचना मानी गई है। इसका उल्लेख नागरी प्रचारिणी सभा, काशी की खोज रिपोर्ट १६०३ तथा १६२६ दोनों में हुआ है। ग्रन्थ महाराजा बनारस पुस्तकालय रामनगर वाराणसी में उपलब्ध है+ जिसका लिपिकाल अज्ञात है। रचना साधारण है , केवल सर्ग विभाजन ही महत्वपूर्ण है अन्यथा सारी कथा संक्षेप में कही गई है। शुष्क इतिवृत्तात्मकता का निर्वाह मात्र है । रचना को लेखक ने स्वयं देखा है जिसमें 'वाल्मीकि रामायण' के आधार पर राम कथा कही गई है तथा बहुत सी प्रासंगिक कथाओं को छोड़ दिया गया है। राम जन्म कथा, वनवास तथा सीता हरण एवं राम-रावण युद्ध जैसे प्रसंग भी संक्षेप में ही हैं ।

१३- रामलला नहछू :

इसके रचयिता हिन्दी के महाकवि गोस्वामी तुलसीदास जी थे जिसका रचना काल सं० १६३६ वि० माना गया है। १ यह प्रबन्धात्मक काव्य के अन्तर्गत खण्ड काव्य के कोटि की रचना है। आनन्दोत्सव या विवाह के अवसरों पर स्त्रियों द्वारा गाये जाने वाले सोहर छन्द में एक ही वर्णन में सम्पूर्ण ग्रन्थ पूर्ण हो गया है। इसमें किसी प्रकार का कथा विभाग नहीं है कुल २० छन्दों में राम के नहछू का वर्णन सीधी ठेठ अवधी में किया गया है। विषय वस्तु की दृष्टि से इसमें राम के विवाह के समय के नहछू को आधार मानकर सामान्य हिन्दू परिवारों में इसी अवसर पर होने वाले नहछू का वर्णन किया गया है अस्तु कथा अत्यन्त संक्षिप्त है ।

१- देखिये - डा० रामकुमार वर्मा हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास संस्करण तृतीय पृष्ठ ३७२

इसमें संस्कृत के तत्सम शब्द बहुत कम है तथा ग्रामीण शब्दों की भरमार है। काव्य की दृष्टि से यह रचना अत्यन्त साधारण है जिसके कारण इसे कुछ विद्वान तुलसीदास जी की प्रारम्भिक रचना मानते हैं।[1] क्योंकि इसमें उनकी उत्कृष्ट काव्य प्रतिभा तथा भक्ति के विशालतम् दृष्टिकोण के दर्शन नहीं होते।

१४- जानकी मंगल :

इसके रचयिता भी महाकवि तुलसीदास जी है। इसका रचनाकाल सं० १६४३ वि० माना गया है। २ सम्पूर्ण ग्रन्थ २१६ छन्दों में रचा गया है जिनमें १९२ अरुण तथा २४ हरिगीतिका छन्द हैं। ८ अरुण छन्दों के पश्चात् एक हरिगीतिका छन्द का क्रम रखा गया है। जानकी मंगल में राम-सीता के विवाह की कथा वर्णित है साथ ही अन्य तीनों भाइयों के विवाह का भी वर्णन किया गया है। किन्तु इस वर्णन में कवि ने अपने ग्रन्थ 'रामचरित मानस' की एतद्विषयक प्रसंग को बिल्कुल बदल दिया है और इसकी कथा वाल्मीकि रामायण की भांति कही गई है। पुष्पवाटिका वर्णन जनकपुर वर्णन तथा लक्ष्मण के दर्प वाला प्रसंग नहीं है। इसी प्रकार परशुराम आगमन का प्रसंग भी जनकपुर की सभा में न दिखाकर विवाह के पश्चात् अयोध्या लौटते समय मार्ग में वर्णित किया गया है। इसमें परम्परागत वैवाहिक प्रथाओं का वर्णन विस्तारपूर्वक हुआ है। काव्य की दृष्टि से रचना प्रबन्ध काव्य के अन्तर्गत खण्ड काव्य के कोटि की है जिसमें शृंगार रस की प्रधानता है। श्रीराम के सौन्दर्य के वर्णन के प्रसंग अत्यन्त मनोरम तथा सजीव हैं।

१५- रामचन्द्रिका :

'रामचन्द्रिका' के रचयिता आचार्य कवि केशवदास जी थे। इसका रचना काल सं० १६५८ वि० माना गया है। इसमें सम्पूर्ण राम कथा वाल्मीकि

१- देखिये डा० रामकुमारवर्मा-हिन्दीसाहित्य का आलोचनात्मक इतिहास - संस्करण तृतीय पृष्ठ ३७२

२- वही - पृष्ठ ३७८

रामायण केआधार पर कही गई है । कतिपय संस्कृत नाटकों का प्रभावभी उस पर देखा जा सकता है। जिसमें प्रसन्न राघव 'तथा 'हनुमन्नाटक' मुख्य हैं । सम्पूर्ण कथा का विभाजन काण्डों अथवा सर्गों में न होकर ३६ प्रकाशों में किया गया है तथा विविध छन्दों का प्रयोग इस प्रकार किया गया है कि सम्पूर्ण रचना छन्दों का अजायब घर सी लगती है । इसी प्रकार उसमें अलंकारों की इतनी भरमार है कि भावों की पूर्ण अवहेलना हो गई है । ऐसा प्रतीत होता है कि कवि ने अपनेआचार्यत्व कीप्रतिष्ठा तथा पांडित्य प्रदर्शन की धुन में प्रबन्ध काव्य के अन्य तत्वों को छोड़दिया है । कथा प्रसंगों में सम्बन्ध निर्वाह का ध्यान ही नहीं रखा गया तथा महाकाव्योचित गम्भीर तथा मार्मिक स्थलों के चित्रण भी बहुत कम मिलते हैं । वस्तु वर्णन मेंभी कवि ने स्थानगत विशेषताओं का ध्यान न रखकर केवल नाम परिगणन मात्र कर दिया है व इसी लिये उनके वर्णन मार्मिक नहीं हुए। विद्वानों ने इसी लिये 'रामचन्द्रिका' को प्रबन्ध काव्य के विचार से समर्थ रचना नहीं माना । १

'रामचन्द्रिका' का सम्वाद योजना की दृष्टि से अवश्य अनुपेक्षणीय महत्व है तथा प्रकृति चित्रण में भी कविने पर्याप्त सफलता पाई है यद्यपि आलंकारिकता की प्रवृत्ति ने यहां पर भी चमत्कार उत्पन्न करने का प्रयासकिया है जिससे कतिपय वर्णन बड़े ही अस्वाभाविक तथा नीरस हो गये हैं। 'जहां कवि ने बिम्ब ग्रहण करने की चेष्टा की है ऐसे स्थल इस बात के प्रत्यक्ष प्रमाण है कि केशव में प्रकृति का शाब्दिक चित्र खींचने की पर्याप्त क्षमता थी। २ समग्रत: हम यह कह सकते हैं कि दोषों के होते हुये भी 'रामचन्द्रिका' प्रबन्ध काव्य केअन्तर्गत महाकाव्य के कोटि की रचना अवश्य है यद्यपि रामचरितमानस की तुलना में उसकी प्रबन्ध श्रृंखला अवश्य ही शिथिल तथा बिखरी हुई है।

१- अ-आचार्य रामचन्द्र शुक्ल-हिन्दी साहित्य का इतिहास आठवां संस्करण पृष्ठ -२११

ब- आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र- हिन्दीसाहित्य का अतीत -पृष्ठ ३६१

२- डा० विजयपाल सिंह - केशव सुधा पृष्ठ ७०

डॉ० विजय पाल सिंह के शब्दों में हम यह भी कह सकते हैं कि ` इसमें केशव का विश्व कोषीय व्यक्तित्व प्रकट हुआ है। उनके समस्त बौद्धिक संस्कार, पाण्डित्य एवं प्रशिक्षण ने एक साथ ही अपनी अभिव्यक्ति इस ग्रन्थ में प्राप्त करने की चेष्टा की है। १

१६- रमायण :

इसके रचयिता भगवन्त राम खीची थे। रचनाकाल सं० १७२७ वि० है। इनका निधन सन् १७३४ ई० (वि० १७९१ वि०) में युद्ध क्षेत्र में हो गया था।2 सम्पूर्ण राम कथा कवित्त, सवैया, शैली में वर्णित है। इस रचना का उल्लेख नागरि प्रचारिणी सभा काशी की खोज रिपोर्ट सन् १९२३ में हुआ है तथा मिश्र बन्धुओं ने भी अपने मिश्र बन्धु विनोद भाग २ द्वितीय संस्करण में इसका उल्लेख किया है। रचना की एक प्रति श्री राम प्रताप द्विवेदी, गोपालपुर असनी, फतेहपुर के पास उपलब्ध है जिसमें लिपिकाल नहीं दिया गया। कथा के विस्तार को सात काण्डों में विभाजित कर प्रत्येक काण्ड की कथा वाल्मीकि रामायण के आधार पर कवित्तों में कही गई है जिसमें विभिन्न अलंकारों, विशेष कर अनुप्रास की छटा देखने ही योग्य है। कवि ने लंका दहन, युद्धादि दृश्यों के वर्णन बड़े उत्साह से किया है। साथ ही राम के बाल्यकाल के चित्र भी बड़े सफल बन पड़े हैं। रचना यद्यपि ब्रज भाषा में है किन्तु अन्य भाषाओं के शब्द भी ग्रहण किये गये हैं। (इसी आधार पर ऐसे मिश्रित भाषा को पिंगल कहा गया है।)3 राम को विष्णु का अवतार मानकर उनकी भक्ति को ग्रहण करने का आग्रह भी मिलता है। समग्रत: रचना को महाकाव्य के रूप में स्वीकार किया जा सकता है।

१७- अंगद पर्व :

इसके रचयिता कवि लालदास जी थे तथा रचना काल अठारहवीं शताब्दी माना गया है। यह लालदास कौन थे इसके संबंध में कुछ विवरण नहीं मिलता।

१- डॉ० विजयपाल सिंह - केशव सुधा- पृष्ठ ११९-१२०

२ - द्रष्टव्य - भगवंतराय खीची और उनके मण्डल के कवि - शोध प्रबन्ध - म० स० विश्वविद्यालय, बड़ौदा की पी० एच० डी० उपाधि के लिये स्वीकृत लेखक - महेन्द्र प्रताप सिंह - पृष्ठ - १०६.

३- वही पृष्ठ १३६.

अगर् चन्द नाहटा ने इसका उल्लेख राजस्थान में हिन्दी के हस्तलिखित ग्रन्थों की खोज चतुर्थ भाग में किया है। उसकी एक प्रति जो अठारहवीं शताब्दी की बताई जाती है अनूप सस्कृत पुस्तकालय, बीकानेर में उपलब्ध है। जिसमें लिपिकाल के स्थान पर लेखनकाल दिया गया है। रचना लेखक ने देखी है जिसमें कुल ८६ पत्र हैं जो जीर्णावस्था के कारण पढ़े नहीं जा सकते। फिर भी इसमें अंगद रावण सम्वाद तथा रावण की सभा का वर्णन किया गया है। राम का संदेशा लेकर जाने वाले अंगद के बल विक्रम का वर्णन भी सादे ढंग से किया गया है। साहित्यिक दृष्टि से रचना साधारण है तथा उसे खण्डकाव्य के रूप में स्वीकार किया जा सकता है।

१८- रामचरित्र :

इसके रचयिता कवि रामाधीन थे। इसका रचना काल अठारहवीं शताब्दी माना गया है यद्यपि किसी निश्चित तिथि का पता नहीं चलता। रचना अनूप सस्कृत पुस्तकालय, बीकानेर में उपलब्ध है जो जीर्णावस्था में है और केवल २७ पत्र ही पढ़ने योग्य हैं जिनमें ५० पद्य पढ़े जा सके हैं। इसग्रन्थ का उल्लेख श्री अगरचन्द नाहटा ने राजस्थान में हस्तलिखित ग्रन्थों की खोज-चतुर्थ भाग में किया है। नाहटा जी ने जिस पद का उल्लेख किया है उसके अन्त में - 'देत असीस सूर चिरजीवहु रामचन्द रनधीरा' जैसी पंक्तियां मिलती हैं जो इससन्देह को जन्म देती हैं कि पद के रचयिता महाकवि सूरदास जी तो नहीं थे ? जो भी हो उक्त पद सूरदास जी के पदों में नहीं मिलता अत: हो सकता है कि लिपिकार ने भूल से सूर का नाम लिख दिया हो। रचना के प्रारम्भिक भाग से यह ज्ञात होता है कि सम्पूर्ण 'रामचरित्र' लिखने की योजना लेकर ही कवि चला था अत: इसेमहाकाव्य के कोटि की रचनाओं में रखा जा सकता है। राम जन्म कथा, बाललीला धनुष लीला के वर्णन से इसकथन की पुष्टि होजाती है जिनमें रावण की चर्चा भी प्रारम्भ में मिलती है।

१९- रामायण :

इसके रचयिता चन्द कवि थे जो अठारहवीं शताब्दी में विद्यमान थे अत: इसका रचना काल अठारहवीं शताब्दी ही माना गया है। इस ग्रन्थ का

उल्लेख भी श्री अगरचन्द नाहटा ने राजस्थान में हस्तलिखित ग्रन्थों की खोज चतुर्थ भाग में किया है। रचना जिन चरित्र सूरि संग्रह -बीकानेर में उपलब्ध है। लिपिकाल का उल्लेख कहीं नहीं मिलता। इसमें दोहा, छप्पय, फूलना तथा सवैया छंदों का प्रयोग हुआ है। सम्पूर्ण राम कथा का वर्णन कवि ने राम को विष्णु के अवतार के रूप में मानकर किया है। प्रारम्भ में गुरु, गणेश, तथा शारदा की वन्दना की गई है तथा यह घोषणा की गई है कि -

आदि अनादि जुगादि है,
जाहि जपै सब कोइ ।
रामचरित्र अद्भुत कथा,
सुनै पुन्य फल होई ।।

रचना खण्डित रूप में ही प्राप्त होती है अत: विस्तृत विवरण नहीं मिलते । साहित्यिक दृष्टि से रचना साधारण किन्तु प्रबन्धात्मक है।

२०- हनुमान दूत :

इसके रचयिता पुरुषोत्तम कवि थे। इसका रचना काल माह वदी ६ सं० १७०१ माना गया है। हो सकता है कि यह कवि का जन्म काल हो क्योंकि इस सबंध में अन्यत्र कोई उल्लेख नहीं मिलता। इस रचना का उल्लेख भी श्री अगरचन्द नाहटा ने राजस्थान के हस्तलिखित ग्रन्थों की खोज-चतुर्थ भाग में किया है। कुल १०४ पदों में सीता की खोज में जाने वाले हनुमान के बल पौरुष, रावण का ऐश्वर्य, अशोक वाटिका में सीता की विरहावस्था का वर्णन किया गया है। लंका दहन तथा लौटकर श्रीराम को सीता के समाचार देने तक की कथा को कवि ने बिना किसी सर्ग विभाजन के वर्णन किया है, कथा सूत्र के अनुसार इसे खण्ड काव्य कहा जा सकता है।

२१- राम-रासौ :

इसके रचयिता माधौदास थे। इसका रचनाकाल सं० १६७५ माना गयाहै

सं० १६६७ की एक प्रति का उल्लेख श्री मोतीलाल मनोरिया ने 'राजस्थान के हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थों की खोज प्रथम भाग में किया है। जिसमें ७६ पत्रों में लिखित १६०१ पदों के उपलब्ध होने की सूचना मिलती है। राम कथा का विस्तार सहित वर्णन विविध छन्दों में किया गया है। श्री मैनारिया जी ने रचना के उपलब्ध होने का स्थल सरस्वती ~~-के-उपलब्ध-होने-~~ भण्डार सूचित किया है किन्तु यह सरस्वती भण्डार कौन सा है और कहां किस नगर में है इसका उल्लेख नहीं किया। अस्तु अन्य विवरण अप्राप्य है

२२- राम अवतार लीला:

इसके रचयिता संत कवि मलूक दास जी थे। मथुरा दास की परिचई के आधार पर इनकी जन्मतिथि वैसाख कृष्ण पंचमी सं० १६३१ वि० माना गया है तथा मृत्यु वैसाख कृष्ण १४ बुधवार सं० १७३६ वि० था। इनकी १० प्रामाणिक कृतियां मानी जाती हैं जिनमें राम अवतार लीला भी है। राम अवतार लीला की रचना अवधी भाषा में हुई है । चौपाई,,दोहा,शैली में रचे गये इस काव्य में सम्पूर्ण रामकथा बड़े विस्तार के साथ कही गई है । डा० त्रिलोकी नारायण दीक्षित,हिन्दी विभाग,लखनऊ विश्वविद्यालय के पास इस रचना की एक प्रति उपलब्ध है। डा० दीक्षित के अनुसार राम अवतार लीला, संत मलूक दास की प्रारम्भिक रचनाओं में से एक थी । जीवन के प्रारम्भ काल में संत मलूकदास अवतारोंपासक थे १ किन्तु जीवन के अन्तिम वर्षों में वे निर्गुण उपासक सन्त हो गये थे। अत: राम अवतार लीला में राम की वही रूप मिलता है जो गोस्वामी तुलसीदास जी ने प्रतिष्ठित किया है। यह संयोग की बात है कि मलूक दास जी का जन्म उसी वर्ष हुआ जिस वर्ष 'रामचरित मानस ' की रचना हुई। अत: इस सम्भावना को साधार ही कहा जायेगी कि 'राम अवतार लीला' पर गोस्वामी तुलसीदास जी का प्रभाव रहा

१- डा०त्रिलोकी नारायण दीक्षित- संत कवि मलूकदास-प्रथम सस्करण पृष्ठ २२ शीर्षक राम अवतार लीला ।

भाषा सरल तथा प्रवाहमयी है तथा उपमा, अनुप्रास ,रूपक,उत्प्रेक्षा जैसे प्रचलित अलंकारों का ही प्रयोग किया गया है। कथा के विस्तार तथा विषय वस्तु के वर्णन एवम् सर्ग विभाजन के आधार पर इस रचना को प्रबन्धात्मक काव्य के अन्तर्गत महाकाव्य के कोटि की रचना कहा जा सकता है।

२३- रामचरित कथा अथवा अवतार चरित्र:

इसके रचयिता नरहरिदास बारहट थे। इसका रचनाकाल सं० १७३३ वि० माना गया है। नागरीप्रचारिणी सभा,काशी के हस्तलिखित हिन्दी पुस्तकों का संक्षिप्त विवरण प्रथम खण्ड पृष्ठ ४६ में इसका उल्लेख हुआ है तथा प्राप्ति स्थान में श्रीरामचन्द्र टण्डन,एम०ए०एल०एल०बी० -१० साउथ रोड,इलाहाबाद की सूचना दीगई है। सं० १८१२ वि० की यह प्रतिलिपि लेखक को प्रयास करने के पश्चात् भी देखने को नहीं मिली। इस रचना की एक प्रति जो सं० १७६७ की है के०एम०मुंशी विद्यापीठ,आगरा में उपलब्ध है। विषयवस्तु की दृष्टि से इसमें सम्पूर्ण राम कथा वर्णित है जिसका आधार वाल्मीकि रामायण है। कथा सूत्र तथा सर्ग विभाजन की दृष्टि से यह महाकाव्य के कोटि की रचना कही जा सकती है यद्यपि इसमें महाकाव्योचित अन्य अंगों का अभाव है। इस कृति का एक अन्य नाम 'कौशलेन्द्र रामायण' भी मिलता है। सं. १८०७ वि. की एक प्रतिलिपि म.स. विश्वविद्यालय, बड़ौदा के हिन्दी विभाग द्वारा संग्रहीत हस्तलिखित हिन्दी ग्रन्थों में उपलब्ध है जिसके लिपिकार [illegible] निवासी [illegible] जी थे। इस प्रति में केवल किष्किन्धाकाण्ड ही प्राप्त होता है। बड़ौदा के ही [illegible] जी के हस्तलिखित ग्रन्थ संग्रह में इसी रचना के बालकाण्ड, किष्किन्धाकाण्ड, आरण्य-काण्ड तथा सुन्दरकाण्ड भी मिलते हैं। यही कृति अलग अलग काण्डों के एल. डी. [illegible] इन्स्टीट्यूट ऑफ इण्डोलॉजी, अहमदाबाद में भी उपलब्ध है। समग्रतः रचना [illegible] ज्ञात होती है तथा विशेष अध्ययन की अपेक्षा रखती है।

२४- अवध विलास :

इस ग्रन्थ के रचयिता कवि लालदास जी थे। इसका रचनाकाल सं० १७३२ वि० माना जाता है। इस ग्रन्थ का उल्लेख डा०बाबूराम सक्सेना ने एवूलूशन आफ अवधी में तथा नागरी प्रचारिणी सभा,काशी द्वारा प्रकाशित हस्तलिखित हिन्दी ग्रन्थों का विवरण (२०२१ वि०) में किया गया है। रचना अब तक अप्रकाशित है तथा उसकी एक प्रतिलिपि सरस्वती भण्डार, लक्ष्मण कोट,

अयोध्या में उपलब्ध है। रचना को लेखक ने स्वयं देखा है जिसमें कुल ६०२ पृष्ठ है तथा सम्पूर्ण ग्रन्थ १८ विश्रामों में दोहा चौपाई शैली में रचा गया है। `अवध विलास ` की रचना ` अवध`को ही केन्द्र मानकर, वहीं पर घटने वाली घटनाओं के संयोजन के द्वारा कवि ने अयोध्या में की है। अत: इसमें सम्पूर्ण राम कथा नहीं मिलती। राम के जन्म से लेकर बनवास तक की कथा कहकर कवि स्वयं अयोध्या छोड़ कर चला जाता है। ग्रन्थ का प्रारम्भ मंगलाचरण से होकर रघुका दान, दशरथ का प्रयाग गमन तथा लोमपाद से उनकी भेंट ,राम जन्म तथा उल्लास का सविस्तार वर्णन किया गया है। अन्तिम सर्ग में दशरथ अपनी पत्रुवधुओं तथा पुत्रों सहित आनन्द पूर्वक जीवन व्यतीत करते हुये दिखायेगये हैं। साथ ही कैकेयी के वरदानों की याचना पर राम वन गमन दिखलाया गया है तथा रचना यहीं समाप्त हो जाती है। कथावस्तु की दृष्टि से यह कहा जा सकता है कि इसमें राम के जीवन का समग्र चित्रण नहीं हुआ किन्तु अठारह विश्रामों में विभक्त अवध विलास की कथा सुसंघटित तथा बहुत सी प्रासंगिक कथाओं को समेटे हुये है। सर्वत्र कथा के सबंध निर्वाह का ध्यान रखा गया है। रचना में मार्मिक स्थल तो भरे पड़े हैं तथा भाषा में प्रवाह, माधुर्य एवं सानुप्रासिकता स्पष्ट दिखाई देती है। अवधी मिश्रित भाषा में काव्य रचना के उद्देश्य पर स्वयं कवि ने यह कहा है-

दोहा - सुधा प्रगट लौकिक वचन,गुनि समुझइ सब कोय।
कठिन शब्द है संस्कृत, भाषा कहिये सोय।।

इसी प्रकार अपनी रचना की विशेषता पर कवि का यह आत्मकथन भी यहाँ दृष्टव्य है -

दोहा - काहे को बहुत चहैं, पोथी भारअनन्त।
पढ़िहैं जो सो होइहै, कहत लाल गुनवन्त।।

लालदास जी ने अवध विलास में दार्शनिक विषयों पर भी चर्चा की है जिससे यह ज्ञात होता है कि कवि द्वैतवादी था। साहित्यिक दृष्टि

से यह रचना अत्यंत महत्वपूर्ण है तथा अवधी के विकास एवं उसकी काव्य-शक्ति को पूर्णत: प्रकट करने वाली है। इस रचना में भाषा तथा दोहा-चौपाई शैली को छोड़कर कहीं भी गोस्वामी तुलसीदास जी का प्रभाव नहीं दिखलाई पड़ता। कथा वस्तु की दृष्टि से कवि ने अधिकांश कथा वाल्मीकि कृत रामायण से ग्रहण की है किन्तु उसमें राम की तीर्थ यात्रा का प्रसंग उसने अपनी कल्पना शक्ति से जोड़ा है। समग्रत: यह कहा जा सकता है कि कवि में महाकाव्य की रचना की प्रतिभा थी और उसने उसका पूर्ण उपयोग किया है। 'अवध विलास' एक स्वतंत्र अध्ययन की अपेक्षा रखती है। आश्चर्य तो यह है कि इतनी सशक्त और महत्वपूर्ण कृति अब तक अप्रकाशित ही है।

२५- सीतायन :

इस ग्रन्थ के रचयिता श्री राम प्रिया शरण जी थे। इसका रचनाकाल सं० १७६० वि० माना गया है। सं० १८६७ वि० की एक प्रति कनक भवन, अयोध्या में उपलब्ध है तथा एक दूसरी प्रति इसी काल की सरस्वती भण्डार, लक्ष्मण कोट, अयोध्या में भी है। इन दोनों ही प्रतियों को लेखक ने स्वयं देखा है। मिश्रबन्धुओं के अनुसार रामप्रियाशरण जी मिथिला निवासी थे१ जिसकी पुष्टि शिव पूजन सहाय ने भी की है। २

डॉ० भगवती प्रसाद सिंह के अनुसार राम प्रियाशरण जिन्हें 'प्रेमकली' के नाम से भी जाना जाता है, रसिक भक्त थे। 'रसिक सन्तों में रामायण के आदर्श पर 'सीतायन' की रचना की है। ३ ग्रन्थ में सीताजी की बाल एवं विवाह के पश्चात् की विहार लीलाओं का वर्णन कवि ने पदों में किया है। सम्पूर्ण रचना सात काण्डों में विभक्त है जिनके नाम इस प्रकार हैं - बालकाण्ड, मधुर माल काण्ड, जयमाल काण्ड, रसमाल काण्ड, सुखमाल काण्ड, रसाल काण्ड और चन्द्रिका काण्ड। काण्डों के शीर्षकों से ही उनमें वर्णित विषयवस्तु का

१- मिश्रबन्धु विनोद भाग २- पृष्ठ ५२६ संस्करण १९८४ वि०

२- शिवपूजन सहाय - हिन्दी साहित्य और विहार प्रथम खण्ड पृष्ठ ६०

३- डा० भगवतीप्रसाद सिंह, रामभक्ति में रसिक भावना पृष्ठ ३६४ प्रथम संस्करण

जो बोध होता है वस्तुत: वही कथा उसमें मिलती है। यद्यपि यह ग्रन्थ सीता के जीवन पर आधारित है किन्तु श्री राम के चरित्र को अलग नहीं किया जा सका । और बाल लीला से लेकर अन्त तक राम का नायकत्व कहीं भी दबा हुआ नहीं कहा जा सकता। इसकी विहार लीलाओं में सीता और राम के मधुर प्रसंगों का विस्तृत वर्णन प्राप्त होता है। सर्गों के विभाजन केअनुसार इसकी कथावस्तु सुसम्बद्ध तथा सुसंघटित है किन्तु इसमें सीता अथवा राम किसी के भी समग्र जीवन का चित्रण नहीं हुआ तथा कवि ने रसिक भक्तों के सिद्धान्तानुसार आगे की कथा नहीं वर्णन की । भाषा अवधी है तथा पद शैली में सम्पूर्ण रचना माधुर्य तथा प्रवाह युक्त होने से अत्यन्त सरस बन पड़ी है। बाल वर्णन में कवि ने स्वाभाविकता का विशेष ध्यान रखा है । श्रृंगार के चित्र अवश्य ही कृत्रिम लगते हैं । ऐसा प्रतीत होता है कि कवि ने नख शिख श्रृंगार वर्णन में समकालीन रीति काल की श्रृंगारी प्रवृत्तियों का अनुसरण किया है। रचना अब तक अप्रकाशित है ।

२६- अवधसागर अथवा अवधीसागर:

`अवध सागर` अथवा `अवधी सागर` के रचयिता श्री जानकी रसिक शरण जी थे। इसका रचना काल सं० १७६० वि० है। ग्रन्थ की एक प्रति सं० १६२५ वि० की लक्ष्मण कोट, अयोध्या में उपलब्ध है तथा एक प्रति छतरपुर दरबार पुस्तकालय में भी है। `अवध सागर` एक विशाल ग्रन्थ है जो अब तक अप्रकाशित है।इसमें १४ अध्याय और कुल ६१६ छन्द हैं। कवि स्वयं `रसिक भावना` की भक्ति का उपासक था अत: इसमें राम-सीता के अष्टयाम का वर्णन विस्तार के साथ किया गया है। वन विलास, जलकेलि, रास, सभा, भोजन, शयन आदि के मधुर प्रसंगों को कवि ने बड़े उत्साह तथा विस्तार के साथ वर्णन किया है। ` अवध के प्रमुख ` कवि` के लेखक डा० ब्रजकिशोर मिश्र ने `अवध सागर` को प्रबन्ध काव्य नहीं माना । १ किन्तु ग्रन्थ के अवलोकन करने सेप्रस्तुत प्रबन्ध के लेखक का यह स्पष्ट मत है कि भले ही उसे एक सफल `महाकाव्य न स्वीकार किया जाये किन्तु उसकी प्रबन्धात्मकता में सन्देह नहीं किया जा सकता।पद शैली में रचित यह ग्रन्थ `अवधी भाषा` का एक विशाल ग्रन्थ है। जिसमें कवि की

काव्य प्रतिभा वस्तु वर्णन, सौन्दर्य वर्णन तथा श्रृंगारादि के चित्रों ह के संवारने में अधिक व्यस्त रही है। जीवन के समग्र चित्र को इस रचना में नहीं देखा जा सकता । इसका मुख्य कारण वह कवि की व्यक्तिक भक्ति भावना ही है। ग्रन्थ के अधिकांश गीत बड़े ही सरस तथा मधुर प्रसंगों से पूर्ण हैं। श्रृंगार वर्णन में समकालीन रीतिकालीन श्रृंगारी प्रवृत्तियों का प्रभाव दिखाई देता है। राम के अनुपम सौन्दर्य पर कवि विशेष रूप से मुग्ध रहा है किन्तु सीता के श्रृंगार का वर्णन भी कवि ने मर्यादित श्रृंगार के अन्तर्गत ही किया है यद्यपि कतिपय प्रसंग इसके अपवाद स्वरूप भी देखे जा सकते हैं ।

२७-सीता चरित्र :

इस ग्रन्थ के रचयिता 'रायचन्द थे तथा इसका रचनाकाल सं० १७१३ वि है। सं० १८०१ वि० की एक प्रति दिगम्बर जैन बड़ा मन्दिर, चूड़ी वाली गली, लखनऊ में जीर्णावस्था में उपलब्ध है। ग्रन्थ को लेखक ने स्वयं देखा है। रविषेण के पद्मपुराण पर आधारित 'सीता चरित्र ' जैन राम कथा से प्रभावित है। अत: परम्परा से प्राप्त राम कथा इसमें नहीं मिलती । ग्रन्थ क में कथा सूत्रों की सम्बद्धता का विशेष ध्यान रखा गया है जिससे इस रचना को महाकाव्य की कोटि में रखा जा सकता है। सीता के जीवन पर अधिकांश कथा के आधारित होने के कारण राम का चरित्र उतना प्रभावशाली तथा व्यापक नहीं हो सका जितना राम कथा के अन्य काव्यों में पाया जाता है। इस आधार पर यदि सीता चरित्र को नायिका प्रधान राम कथा का महाकाव्य कहा जाये तो अनुचित न होगा। साथ ही हिन्दी राम काव्य धारा में जिन विभिन्न प्रवृत्तियों को स्थान मिला था, उसका यह ग्रन्थ एक सशक्त उदाहरण है। रचना अब तक अप्रकाशित तथा विशेष अध्ययन की अपेक्षा रखती है। हिन्दी राम काव्य धारा में यदि सीता के चरित्र को प्रधानता प्रदान करने वाली रचनाओं का स्वतंत्र अध्ययन किया जाये तो सीता चरित्र तथा सीतायन (रामप्रिया शरण) जैसी रचनायें अत्यन्त महत्वपूर्ण सिद्ध होंगी। ' सीता चरित्र ' की एक प्रति दिगम्बर जैन मन्दिर, बाराबंकी में भी उपलब्ध है ।

२८- गोविन्द रामायण :

इस ग्रन्थ के कर्ता गुरु गोविन्द सिंह थे। इसका रचना काल सं० १७५५ वि० था। नयना देवी पहाड़ कैनी चै सतलज के तट पर जिस स्थान पर बैठ कर गुरुगोविन्द सिंह जी ने आषाढ़ कृष्ण प्रतिपदा को इस ग्रन्थ की रचना पूर्ण की थी १उसे आजकल आनन्दपुर साहब कहा जाता है। विविध छन्दों में रची गई गोविन्द रामायण में राम जन्म से लेकर राम के गोलोक प्रस्थान तक की कथा वर्णित की गई है जो बीस सर्गों में विभाजित की गई है तथा जिसमें दोहा, चौपाई को छोड़कर अन्य ३७ प्रकार के छन्दों का प्रयोग किया गया है। सम्पूर्ण रचना में वीर रस अंगी रूप में स्वीकार किया गया है तथा अन्य रसों का प्रसंगानुसार समायोजन किया गया है। भाषा में आनुप्रासिकता तथा ध्वन्यात्मकता विशेष रूप से देखी जा सकती है। युद्ध वर्णनादि में ध्वन्यात्मकता इतनी सशक्त तथा उच्च कोटि की है कि सम्पूर्ण वर्णन चित्रोपम हो गये हैं। अलंकारों का भी कवि ने सफलता पूर्वक प्रयोग किया है जिनमें अनुप्रास, यमक, श्लेष, रूपक,उपमा,उत्प्रेक्षा, भ्रान्तिमान,सन्देह , अतिशयोक्ति मुख्य रूप से मिलते हैं। इन अलंकारों के कारण कहीं भी काव्य की रसात्मकता में बाधा नहीं उत्पन्न होती और न वे ऊपर से थोपे हुये प्रतीत होते हैं। इसी प्रकार विविध छन्दों के प्रयोग के कारण भी काव्य सौष्ठव में कोई बाधा नहीं उत्पन्न हुई। भावोत्कर्ष के लिये ही कवि ने छन्द परिवर्तन किये हैं।

गोविन्द रामायण की कथावस्तु यद्यपि वाल्मीकि रामायण से ही ग्रहण की गई है किन्तु कवि ने कतिपय प्रसंगों में आवश्यक परिवर्तन भी किये हैं। विशेष कर सूर्पणखा प्रसंग तथा अश्वमेध यज्ञ के घोड़े की रक्षा में लवकुश के साथ राम तथा उनकी समस्त सेना के युद्ध प्रसंग में। गुरुगोविन्द सिंह जी ने लवकुश के द्वारा श्रीराम की मृत्यु तथा पराजय भी दिखाई है जो कि सम्भवत: अन्य

१- गोविन्द रामायण के अन्त में गुरुगोविन्द सिंह जी ने ग्रन्थ का रचनाकाल तथा रचना स्थल दोनों का उल्लेख इसप्रकार किया है -

' सम्वत् सत्रह सहस्र पचावन। हाड़वदी प्रथमा सुख दावन ।।
तब प्रसाद करि ग्रन्थ सुधारा।भूलपरी लहु लेहुसुधारा ।।
नैत्र तुंग के चरण तर शतद्रवती र तरंग।श्री भगवत पूरन कियौ रघुवरकथा प्रसंग।

किसी राम कथा में नहीं मिलती। १ इसी प्रकार राम के पश्चात् अयोध्या की राजगद्दी पर लव सिंहासनारूढ़ हुये दिखाये गये हैं २ जबकि राम कथा में कुश को ही राम का उत्तराधिकारी और वाद में अयोध्या का सम्राट कहा गया है।

'गोविन्द रामायण' में कवि ने परम्परा से प्राप्त राम कथा के पात्रों में भी चारित्रिक उदात्तता प्रदान की है। विशेष कर लक्ष्मण तथा रावण के चरित्रों में। लक्ष्मण को प्राय: सभी राम कथाओं में क्रोधी तथा वाचाल दिखाया गया है किन्तु गुरुजी ने उन्हें महान् यती तथा साधक, विवेक शील और वीर पुरुष के रूप में चित्रित किया है। सूर्पणखा प्रसंग पर नवीन उद्भावना द्वारा कवि ने नाक कटने को एक व्यंग्यार्थ के रूप में ग्रहण कर लक्ष्मण द्वारा उसके साथ किये गये व्यवहार में उनकी चारित्रिक गरिमा की रक्षा की है। इस प्रकार गोविन्द रामायण में राम कथा को आवश्यक मोड़ देने का प्रयास भी किया गया है इसी प्रकार रावण के चरित्र में परम्परा से आरोपित विशेषणों के स्थान पर उसे एक महान् पराक्रमी योद्धा विजयी सम्राट तथा निरंकुश शासक के रूप में चित्रित किया गया है।

साहित्यिक दृष्टि से गोविन्द रामायण ' का महत्वपूर्ण योगदान यह है कि उसमें युग की सामन्तवादी दुर्नीतियों तथा अत्याचारों का पूर्ण प्रतिबिम्ब दिखाई देता है। मुगल शासकों के अत्याचारों धार्मिक असहिष्णुता तथा हिन्दुओं के प्रति अमानुषिक व्यवहार से क्षुब्ध समकालीन जन मानस का प्रतिबिम्ब तथा उन अत्याचारों एवं बर्बरता पूर्ण कृत्यों के विरोध में खड़ा होने वाले संघर्ष के चित्र 'गोविन्द रामायण ' में दिखाई देते हैं। गुरु गोविन्दसिंह ने स्वयं जिस संघर्ष का नेतृत्व किया था उनकी स्वयं की अनुभूतियां काव्य में प्रभावी ढंग से व्यक्त हुई हैं और राम-रावण का संघर्ष उनके तथा मुगल शासकों के बीच होने वाला संघर्ष ही कहा जा सकता है। कवि स्वयं एक

१- गोविन्द रामायण- सीता वनवास सर्ग -
अंग अंग वधे। सवतन छेदे। सव दान सूझे। रघुवर जूझे।।

२- वही अन्तिम सर्ग - अवध प्रवेश -
अरु पितु भ्रात तिहें कहं दहा। राज छत्र लव के सिर रहा।
लव सिर धरा राज का साजा। तिहुंअन तिहुं कुट कीपन राजा।

सेनानी तथा कुशल योद्धा था अत: युद्ध वर्णन बहुत ही सजीव तथा स्वाभाविक बन पड़े हैं। समकालीन अस्त्र-शस्त्रों के भिन्न भिन्न प्रयोग,विभिन्न प्रकार की व्यूह रचना तथा सैन्य संचालन की कुशलता गोविन्द रामायण में दिखाई देते हैं। वस्तुत: कवि ने राम के वीर रूप तथा उनके लोक नायकत्व एवं सेनानी के प्रखरतम् चरित्र को उद्घाटित करने की सफल प्रयास किया है। गोविन्द रामायण के युद्ध वर्णन पढ़ते समय वीरता साकार हो उठती है तथा रोम रोम उत्तेजित हो उठता है। हिन्दी राम काव्य धारा में युद्ध वर्णन की दृष्टि से 'गोविन्द रामायण' का विशेष महत्व है।

प्रबन्ध काव्य की दृष्टि से गोविन्द रामायण एक सफल महाकाव्य कहा जायेगा। महाकाव्योचित सभी तत्वों का उसमें समुचित संयोजन मिलता है। सर्ग विभाजन कथा वस्तु के विन्यास, मार्मिक तथा गम्भीर स्थलों की योजना वस्तु वर्णन तथा सम्बन्ध निर्वाह की दृष्टि से गोविन्द रामायण में किसी प्रकार की कमी नहीं मिलती। प्रासंगिक कथाओं का सगुम्फन तथा रसात्मक बोध कराने वाले वर्णन पर्याप्त मात्रा में मिलते हैं। समग्रत: गोविन्द रामायण, एक सफल महाकाव्य है जिस पर स्वतंत्र विस्तृत अनुशीलन की आवश्यकता है। गोविन्द रामायण का प्रकाशन साहित्य रत्नमाला कार्यालय द्वारा सन् १९५३ में हो चुका है जिसके सम्पादक संत इन्द्रसिंह चक्रवर्ती हैं।

२९- रामाश्वमेघ :

इसके रचयिता नारायण दास जी थे तथा रचनाकाल सं० १७३९ माना गया है। सं० १९१५ की एक प्रति याज्ञिक संग्रह नागरी प्रचारिणी सभा काशी में प्राप्त होने का उल्लेख मिलता है। सीता वनवास,लवकुश जन्म अश्वमेघ यज्ञ, लवकुश का राम लक्ष्मण तथा उनकी सेना से युद्ध, सीता मिलन तथा उनका पृथ्वी में विलीन होने तक की कथा इस रचना में कही गई है। युद्ध वर्णन में कवि ने विशेष उत्साह प्रदर्शित किया है। यह रचना साहित्यिक दृष्टि से साधारण है किन्तु प्रबन्ध काव्य के अन्तर्गत उसे खण्ड काव्य की कोटि में रखा जा सकता है।

३०- रघुवंश दीपक :

इसके रचयिता कवि सहजराम जी थे तथा रचनाकाल सं० १७८९ वि० है। ग्रन्थ का विस्तृत तथा पूर्ण परिचय इस प्रबन्ध के अनुशीलन का मुख्य विषय है, अत: इससबंध में केवल इसका उल्लेख मात्र करना पर्याप्त होगा।

निष्कर्ष

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर हम निम्नलिखित निष्कर्षों पर सरलता से पहुंच सकते हैं -

१- कथावस्तु के आधार पर उपर्युक्त रचनाओं के तीन स्त्रोत दिखाई देते हैं। प्रथम `वाल्मीकि रामायण` के स्त्रोत पर आधारित तथा द्वितीय गोस्वामी तुलसीदास आदि द्वारा प्रस्तुत समन्वयात्मक स्त्रोत और तृतीय जैन राम कथा के स्त्रोत पर आधारित कथावस्तु। विभिन्न रचनाओं में इन स्त्रोतों से ग्रहण की जाने वाली सामग्री में भी कवियों ने अपनी रुचि तथा उद्देश्यगत मौलिक चेतना के आधार पर आवश्यक परिवर्तन किये हैं।

२- छन्दों की दृष्टि से उपर्युक्त सभी रचनाओं में विविधता के दर्शन होते हैं। छन्दों ब के प्रयोग के लिये प्रसिद्ध आचार्य केशवदास जी की रामचन्द्रिका के अतिरिक्त `गोविन्द रामायण` `राम रासो` चन्द कवि कृत `रामायण` में विभिन्न छन्दों के सफल प्रयोग हुये हैं।

३- उपर्युक्त रचनाओं में विभिन्न भाव भूमियों पर आधारित व्यापक तथा समग्र जीवन के चित्र मिलते हैं साथ ही जीवन के किसी एक ही पक्ष को लेकर भी काव्य रचना हुई है। मानव जीवन के सभी पक्षों कं उद्घाटित करने का प्रयास आलोच्य काल की विभिन्न रचनाओं में मिलता है। अत: भावाभिव्यक्ति की दृष्टि से भी यह रचनायें अत्यन्त महत्वपूर्ण ठहरती हैं।

४- उपर्युक्त रचनाओं में १६ महाकाव्य तथा ११ खण्ड काव्य के कोटि की रचनायें हैं। इसआधार पर यह कहा जा सकता है कि इस काल के कवियों में जीवन के व्यापक दृष्टिकोण को लेकरकाव्य रचना की महान् प्रतिभा थी।

=----------